प्रश्न-1. "भारतीय संवैधानिक न्यायशास्त्र में मूल संरचना का सिद्धांत एक महत्वपूर्ण आधारशिला रहा है।" भारतीय संविधान की मूल संरचना को विकसित करने और संरक्षित रखने में सर्वोच्च न्यायालय की भूमिका का विश्लेषण करें। (200 शब्द)

उत्तरः

भूमिका

मूल संरचना का सिद्धांत भारतीय संविधान के मूलभूत सिद्धांतों को सुरक्षित रखता है, इसे ऐसे संशोधनों से बचाता है जो इसके मूल भाव को कमजोर कर सकते हैं। सर्वोच्च न्यायालय ने न्यायिक समीक्षा के माध्यम से इस सिद्धांत को विकसित करने और बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सिद्धांत का विकास

1. **शंकर प्रसाद बनाम भारत संघ (1951):** अनुच्छेद 368 के अंतर्गत संसद को संविधान, जिसमें मौलिक अधिकार शामिल हैं, संशोधित करने की शक्ति को सही ठहराया।
2. **सज्जन सिंह बनाम राजस्थान राज्य (1965):** इस शक्ति की पुनः पुष्टि की गई, लेकिन अपरिवर्तनीयता पर असहमति देखी गई।
3. **गोलकनाथ बनाम पंजाब राज्य (1967):** अनुच्छेद 13 के अंतर्गत संसद को मौलिक अधिकार संशोधित करने से प्रतिबंधित किया गया।
4. **24वां संविधान संशोधन अधिनियम (1971):** संसद को संविधान के किसी भी भाग को संशोधित करने की शक्ति प्रदान की गई।
5. **केशवानंद भारती बनाम केरल राज्य (1973):** इसके अंतर्गत यह निश्चित किया गया कि संशोधन संविधान की मूल संरचना को नष्ट नहीं कर सकते। धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र, और संघवाद जैसे प्रमुख तत्वों की पहचान की गई।

सिद्धांत का विस्तार

- **इंदिरा गांधी बनाम राज नारायण (1975):** स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनावों को मूल संरचना का हिस्सा माना गया।
- **मिनर्वा मिल्स बनाम भारत संघ (1980):** मौलिक अधिकारों और नीति निदेशक सिद्धांतों में संतुलन स्थापित किया गया।
- **एस.आर. बोम्मई बनाम भारत संघ (1994):** धर्मनिरपेक्षता और संघवाद की पुनः पुष्टि की गई।

निष्कर्ष

यह सिद्धांत संविधान की मौलिक पहचान को संरक्षित करता है, और इसे एक जीवंत दस्तावेज के रूप में बनाए रखता है, जो बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप ढल सकता है।

Chronicle ias

प्रश्न-2. अनुच्छेद 19 के तहत भारतीय संविधान में कौन-कौन से अधिकार शामिल हैं? (125 शब्द)

उत्तर:

भूमिका

भारतीय संविधान का अनुच्छेद 19 छह मौलिक स्वतंत्रताओं की गारंटी देता है, जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता और लोकतांत्रिक समाज के लिए आवश्यक हैं।

प्रमुख स्वतंत्रताएँ

1. **वाक् और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता:** स्वतंत्र अभिव्यक्ति की अनुमति देता है, जो लोकतंत्र के लिए महत्वपूर्ण है, लेकिन इसमें मानहानि और राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे प्रतिबंध शामिल हैं (इंदिरा गांधी बनाम राज नारायण, 1975)।
2. **शांतिपूर्ण सभा की स्वतंत्रता:** शांतिपूर्ण विरोध और सभाओं को सक्षम बनाता है, जैसे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और किसान आंदोलन (2020-2021)।
3. **संघों या यूनियनों के गठन की स्वतंत्रता:** नागरिकों को समूह बनाने की शक्ति देता है, जिसमें ट्रेड यूनियन और राजनीतिक दल शामिल हैं।
4. **स्वतंत्र रूप से घूमने की स्वतंत्रता:** भारत के भीतर बिना बाधा यात्रा की अनुमति देता है, सार्वजनिक व्यवस्था या अपराध रोकथाम के अधीन।
5. **कहीं भी रहने और बसने की स्वतंत्रता:** भारत में कहीं भी रहने का अधिकार सुनिश्चित करता है।
6. **किसी भी व्यवसाय का अभ्यास करने की स्वतंत्रता:** नियामक ढांचे के भीतर व्यवसाय या व्यापार करने की अनुमति देता है।

निष्कर्ष

ये स्वतंत्रताएँ, युक्तिसंगत प्रतिबंधों के साथ, व्यक्तिगत अधिकारों और सार्वजनिक हित में संतुलन सुनिश्चित करती हैं, स्वतंत्रता और सामाजिक समरसता को बढ़ावा देती हैं।

ChronicleIAS

प्रश्न-3. पंचायती राज संस्थाओं (PRIs) और शहरी स्थानीय निकायों (ULBs) के लिए वित्तीय हस्तांतरण को मजबूत करने में वित्त आयोग की भूमिका का समालोचनात्मक विश्लेषण करें। (200 शब्द)

उत्तर:

भूमिका

वित्त आयोग पंचायती राज संस्थाओं (PRIs) और शहरी स्थानीय निकायों (ULBs) को वित्तीय संसाधन प्रदान करके विकेन्द्रीकृत शासन को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसका उद्देश्य इन निकायों को पर्याप्त वित्तीय सहायता देकर स्थानीय शासन को मजबूत करना है।

वित्तीय हस्तांतरण को मजबूत करने में भूमिका

1. **धन का हस्तांतरण:** वित्त आयोग ने PRIs और ULBs को आवंटित धनराशि में लगातार वृद्धि की सिफारिश की है। 14वें वित्त आयोग (2015) ने स्थानीय निकायों के लिए कुल हस्तांतरण का हिस्सा 62% तक बढ़ा दिया, जो स्थानीय शासन को सशक्त बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम था।
2. **अनुदानों की सिफारिश:** 15वें वित्त आयोग (2020) ने PRIs और ULBs के लिए पांच वर्षों में ₹90,000 करोड़ आवंटित किए, जिसका उद्देश्य आधारभूत संरचना, स्वच्छता, स्वास्थ्य और शिक्षा में सुधार करना है।
3. **प्रदर्शन-आधारित वित्त पोषण:** वित्त आयोग ने धन आवंटन को प्रदर्शन से जोड़ा। यह स्थानीय निकायों को सुशासन और धन के प्रभावी उपयोग के लिए प्रेरित करता है।
4. **संसाधनों का समान वितरण:** 15वें वित्त आयोग ने जनसंख्या और गरीबी संकेतकों के आधार पर धन आवंटित करने पर जोर दिया, जिससे कमजोर क्षेत्रों को अधिक समर्थन मिल सके।
5. **उभरती आवश्यकताओं के लिए विशेष अनुदान:** आयोग ने जलवायु परिवर्तन, शहरीकरण, और महामारी प्रबंधन जैसे मुद्दों के लिए विशेष अनुदान की सिफारिश की।
6. **क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण:** स्थानीय अधिकारियों को पारदर्शिता और परियोजना कार्यान्वयन में प्रशिक्षित करने के लिए निधियों की सिफारिश की गई।
7. **शहरी-ग्रामीण असमानता का समाधान:** आयोग ने शहरी और ग्रामीण निकायों के बीच बढ़ती असमानता को दूर करने के लिए प्रयास किया।
8. **उत्तरदायित्व तंत्र:** आयोग ने स्थानीय स्तर पर पारदर्शिता और सार्वजनिक प्रतिक्रिया के लिए ढांचे की सिफारिश की।
9. **ULBs के लिए लचीलापन:** शहरी निकायों को उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार धन का उपयोग करने की अनुमति दी गई।

चुनौतियाँ

वित्त प्रबंधन में स्थानीय निकायों की क्षमता, पारदर्शिता की कमी, और धन हस्तांतरण में देरी जैसी समस्याएँ बनी हुई हैं।

निष्कर्ष

वित्त आयोग ने PRIs और ULBs के लिए वित्तीय हस्तांतरण को मजबूत करके विकेन्द्रीकृत शासन और समावेशी विकास में योगदान दिया है। हालांकि, धन के उपयोग और सुशासन में प्रणालीगत चुनौतियों का समाधान आवश्यक है।

Chronicle IAS

प्रश्न-4. "संयुक्त राज्य अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव की प्रक्रिया भारत में राष्ट्रपति चुनाव से किस प्रकार भिन्न है?"
(200 शब्द)

उत्तर:

भूमिका

संयुक्त राज्य अमेरिका और भारत में राष्ट्रपति चुनाव की प्रक्रियाएँ चुनाव के तरीके, निर्वाचकों की भूमिका और उपयोग किए गए चुनावी प्रणालियों जैसे कई मुख्य पहलुओं में भिन्न हैं। ये अंतर दोनों देशों की राजनीतिक और संवैधानिक संरचनाओं को दर्शाते हैं।

चुनावी प्रक्रिया

- संयुक्त राज्य अमेरिका: यहाँ नागरिक इलेक्टोरल कॉलेज के निर्वाचकों के लिए मतदान करते हैं, जो बाद में राष्ट्रपति का चयन करते हैं। यह अप्रत्यक्ष चुनाव प्रक्रिया राज्यों के महत्व को रेखांकित करती है।
- भारत: भारत में, राष्ट्रपति का चुनाव संसद सदस्यों (MPs) और विधानसभाओं के सदस्यों (MLAs) द्वारा किया जाता है। यह प्रक्रिया निर्वाचित प्रतिनिधियों की भागीदारी के माध्यम से होती है।

चुनावी प्रणाली

- **संयुक्त राज्य अमेरिका:** इलेक्टोरल कॉलेज प्रणाली में 538 निर्वाचक होते हैं, और जीत के लिए 270 वोटों की आवश्यकता होती है।
- **भारत:** भारत में, राज्यों की जनसंख्या के आधार पर MPs और MLAs का weightage average होता है। एकल संक्रमणीय वोट प्रणाली (Single Transferable Vote) का उपयोग किया जाता है।

राजनीतिक दल और उम्मीदवार चयन

- **संयुक्त राज्य अमेरिका:** यहाँ चुनाव दो प्रमुख दलों-डेमोक्रेट और रिपब्लिकन-द्वारा नियंत्रित होते हैं।
- **भारत:** भारत में बहुदलीय प्रणाली है, जहाँ क्षेत्रीय दल और गठबंधन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

आयाम	संयुक्त राज्य अमेरिका	भारत
चुनावी प्रक्रिया	इलेक्टोरल कॉलेज के माध्यम से अप्रत्यक्ष चुनाव। नागरिक निर्वाचकों को वोट देते हैं।	सांसदों और विधायकों द्वारा अप्रत्यक्ष चुनाव।
चुनावी प्रणाली	इलेक्टोरल कॉलेज प्रणाली (538 निर्वाचक)। 270 वोट जीत के लिए आवश्यक।	राज्यों की जनसंख्या के आधार पर वोट। एकल संक्रमणीय वोट प्रणाली।
राजनीतिक दलों की भूमिका	दो प्रमुख दल: डेमोक्रेट और रिपब्लिकन।	बहुदलीय प्रणाली। क्षेत्रीय दल और गठबंधन प्रभावी।
निर्वाचक	नागरिक निर्वाचकों को वोट देते हैं, जो राष्ट्रपति का चयन करते हैं।	सांसद और विधायक वोट देते हैं।
मतदान प्रक्रिया	निर्वाचकों के लिए मतदान।	सांसदों और विधायकों का मतदान, जनसंख्या आधारित वजन के साथ।
चुनाव की अवधि	प्रत्येक चार वर्ष में, (नवंबर के पहले मंगलवार को)।	हर पाँच वर्ष, जब तक कि रिक्ति न हो।

निष्कर्ष

हालाँकि दोनों देशों में चुनाव अप्रत्यक्ष प्रणाली पर आधारित हैं, लेकिन उनके चुनावी तंत्र उनके अद्वितीय राजनीतिक और संस्थागत ढाँचे को दर्शाते हैं।